विषय : नागरिक शास्त्र
(कक्षा—12)

केवल प्रश्न—पत्र   अधिकतम अंक : 100   समय : 3 घण्टे

खण्ड 'क'	समकालीन विश्व राजनीति	अंक
इकाई—एक— 1	दो ध्रुवीयता का अंत	20
2	सत्ता के वैकल्पिक केन्द्र	
3	समकालीन दक्षिण एशिया	
इकाई—दो— 1	अन्तर्राष्ट्रीय संगठन	15
2	समकालीन विश्व में सुरक्षा	
इकाई—तीन— 1 2	पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन वैश्वीकरण	15
	योग	**50 अंक**
खण्ड 'ख'	**स्वतन्त्र भारत में राजनीति**	
इकाई—चार— 1	राष्ट्र निर्माण की चुनौतियाँ	16
2	एक दल के प्रभुत्व का दौर	
3	नियोजित विकास की राजनीति	
इकाई—पांच— 1	भारत का विदेश सम्बन्ध	18
2	कांग्रेस कार्य प्रणाली की चुनौतियां	
3	लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट	
इकाई—छः— 1	जन आंदोलनों का उदय	16
2	क्षेत्रीय आकांक्षाएँ	
3	भारतीय राजनीति : नए बदलाव	
	योग	**50 अंक**

कक्षा—12

1. **प्रश्नों के प्रकार**

प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक	कुल अंक
बहुविकल्पीय प्रश्न	10	1	10
अतिलघु उत्तरीय प्रश्न	10	2	20
लघु उत्तरीय प्रश्न	06	5	30
दीर्घ लघु उत्तरीय प्रश्न	04	6	24
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	02	8	16
	प्रश्नों की संख्या—32		**योग — 100**

2. **प्रश्नों के उद्देश्यों पर बल**

क्रमांक	प्रश्नों का प्रकार	अंक	अनुमानित प्रतिशत
1.	ज्ञानात्मक	40	40%
2.	बोधात्मक	40	40%
3.	अनुप्रयोगात्मक	20	20%

	योग–	100	**100%**

3. <u>प्रश्नों की कठिनाई स्तर पर बल</u>

क्रमांक	क्लिष्टता स्तर	अंक	प्रतिशत
1.	सरल	30	30%
2.	सामान्य	50	50%
3.	कठिन	20	20%
	योग–	100	**100%**

नागरिक शास्त्र पूर्णांक : 100 अंक
कक्षा–12

खण्ड 'क' : समकालीन विश्व राजनीति पूर्णांक : 50

इकाई– I 20 अंक

(1) दो ध्रुवीयता का अंत–

विश्व राजनीति में नई सत्ताएँ : रुस, बाल्कन राज्य, केन्द्रीय एशियाई राज्य; उत्तर–साम्यवादी शासनकाल में लोकतांत्रिक राजनीति और पूँजीवाद का प्रवेश। रूस एवं उत्तर–साम्यवादी राज्यों के साथ भारत के सम्बन्ध।

(2) सत्ता के वैकल्पिक केन्द्र–

उत्तर–माओ युग में चीन का आर्थिक शक्ति के रूप में उदय; यूरोपीय संघ का निर्माण एवं विस्तार। आसियान, चीन के साथ भारत के बदलते सम्बन्ध।

(3) समकालीन दक्षिण एशिया (उत्तर शीत युद्व युग में)–

पाकिस्तान और नेपाल का लोकतान्त्रिकरण। श्रीलंका का नस्लीय (प्रजातीय) संघर्ष; क्षेत्र पर आर्थिक वैश्वीकरण का प्रभाव। दक्षिण एशिया में संघर्ष एवं शांति के लिये प्रयास। भारत के पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध।

इकाई– II 15 अंक

(1) अन्तर्राष्ट्रीय संगठन–

संयुक्त राष्ट्र संघ का पुनर्गठन एवं भविष्य। पुनर्गठित संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थिति। नये अन्तर्राष्ट्रीय कर्त्ताओं का उदय; नये अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठन, गैर सरकारी संगठन।

(2) समकालीन विश्व में सुरक्षा–

सुरक्षा की पारम्परिक धारणा; निःशस्त्रीकरण की राजनीति। गैर–पारम्परिक या मानवीय सुरक्षा; वैश्विक गरीबी, स्वास्थ्य एवं शिक्षा। मानव अधिकार और पारगमन (पलायन) के मुद्दे।

इकाई– III 15 अंक

(1) पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन–

पर्यावरणीय आन्दोलन और वैश्विक– पर्यावरणीय मानकों का मूल्यांकन। संसाधनों की भू–राजनीति (पारंपरिक एवं अन्य संसाधनों पर संघर्ष) मूलवासियों के अधिकार। वैश्विक पर्यावरणीय विचार में भारत का पक्ष।

(2) वैश्वीकरण– आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक घोषणा– पत्र। वैश्वीकरण विरोधी आन्दोलन। वैश्वीकरण के कार्यक्षेत्र के रूप में भारत और इसके विरूद्ध संघर्ष।

खण्ड 'ख' : स्वतन्त्र भारत में राजनीति — 50अंक

इकाई– IV — 16 अंक

(1) राष्ट्र निर्माण की चुनौतियाँ–

राष्ट्र–निर्माण में नेहरू का दृष्टिकोण; विभाजन की विरासत : शरणार्थियों के पुनर्वास की चुनौती, कश्मीर की समस्या; राज्यों का गठन एवं पुनर्गठन; भाषा पर राजनीतिक संघर्ष।

(2) एक दल के प्रभुत्व का दौर–

प्रथम तीन आम चुनाव; राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति; राज्य स्तर पर असमान प्रभुत्व; कांग्रेस की गठबन्धीय प्रकृति। प्रमुख विपक्षी दल।

(3) नियोजित विकास की राजनीति–

पंचवर्षीय योजनायें, राज्य–क्षेत्र का विस्तार एवं नये आर्थिक हितों का उदय, पंचवर्षीय योजनाओं की कमियाँ एवं विलम्ब के कारण।

इकाई– V — 18 अंक

(1) भारत का विदेश सम्बन्ध–

नेहरू की विदेश नीति; भारत–चीन युद्ध 1962; भारत–पाक युद्ध 1965 एवं 1971; भारत का परमाणु कार्यक्रम; विश्व राजनीति में बदलते सम्बन्ध।

(2) कांग्रेस कार्यप्रणाली की चुनौतियाँ–

नेहरू के बाद की राजनीतिक परिपाटी; गैर कांग्रेसवाद और 1967 का चुनावी विचलन; (पलट) कांग्रेस का विभाजन एवं पुनर्गठन; कांग्रेस की 1971 के चुनावों में विजय।

(3) लोकतांत्रिक व्यवस्था के संकट–

गुजरात का नवनिर्माण आन्दोलन एवं बिहार का आन्दोलन; न्याय पालिका से संघर्ष, आपातकाल : प्रकरण (प्रसंग); संवैधानिक एवं संविधानेत्तर आयाम (पहलू); आपातकाल का विरोध। 1977 के चुनाव और जनता पार्टी का उदय (उत्त्पत्ति)।

इकाई–VI 16 अंक

(1) जन आन्दोलनों का उदय–(भारत के लोकप्रिय आन्दोलन)

(2) क्षेत्रीय आकांक्षाएँ एवं अन्तर्द्वन्द–

क्षेत्रीय दलों का उदय; पंजाब संकट एवं 1984 के सिक्ख विरोधी दंगे। कश्मीर की स्थिति, पूर्वोत्तर में चुनौतियाँ एवं प्रतिक्रियाएँ।

(3) भारतीय राजनीति में नये बदलाव–

1990 में भागीदारी की लहर। जनता दल एवं भारतीय जनता पार्टी का उदय; क्षेत्रीय दलों की बढ़ी भूमिका और गठबंधन की राजनीति : राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठनबंधन (NDA) (1998–2004), संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन(UPA)(2004–2014), राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) (2014 से अब तक)। मण्डल आयोग की रिपोर्ट लागू करना, साम्प्रदायिकता, धर्म निरपेक्षता और लोक तन्त्र।